ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–70

दिनांक: शुक्रवार, 11 सितम्बर, 2026

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन केअनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 33.8 एवं 24.4 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 88 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 78 प्रतिशत, हवा की औसत गति 7.7 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 4.0 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 5.7 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5से0मी0 गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 31.5 एवं दोपहर में 36.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि 12.1 मिमी वर्षा दर्ज की गई है।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(12–16 सितंबर,2026)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 12 से 16 सितंबर, 2026 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमानित अवधि में 13–14 सितंबर के आसपास उत्तर बिहार के अधिकांश जिलों के कई स्थानों पर गरज वाले बादलों के बनने के साथ हल्की वर्षा हो सकती है।
- इस दौरान अधिकतम तापमान 32–35°C तथा न्यूनतम तापमान 22–26°C के बीच रहने की संभावना है।
- सुबह के समय सापेक्ष आर्द्रता 80–95% तथा दोपहर में 55–65% के आसपास रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमान अवधि के दौरान हवा मुख्यतः पूर्वी या दक्षिण–पूर्वी दिशा से 8–10 किमी प्रति घंटे की गति से चल सकती है।

समसामयिक सुझाव

- अरहर: अरहर की बुआई 15 सितंबर तक पूरी कर लें। उपयुक्त किस्मों में *शरद, पूसा*–9 एवं *राजेंद्र अरहर*–1 शामिल हैं। ऊपरी भूमि तथा कम वर्षा के कारण धान की रोपाई न होने से खाली पड़े खेतों में अरहर की खेती की जा सकती है। 45–50 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर की दर से 30×10–15 सेमी की दूरी पर बुआई करें। अनुशंसित उर्वरक के अनुसार 20 किग्रा नत्रजन, 45 किग्रा फास्फोरस, 20 किग्रा पोटाश एवं 20 किग्रा गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। बुआई के 25–30 दिन बाद 10 किग्रा नत्रजन प्रति हेक्टेयर की अतिरिक्त मात्रा (22 किग्रा यूरिया प्रति हेक्टेयर) टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें तथा इसके बाद निराई–गुड़ाई करें। जिंक की कमी वाली मिट्टी में बुआई के समय जिंक सल्फेट दवा 25 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
- धान: धान की फसल में लीफ फोल्डर एवं भूरा माहू (BPH) के प्रकोप की नियमित निगरानी करें। प्रकोप दिखाई देने पर लीफ फोल्डर के नियंत्रण हेतु क्लोरेंट्रानिलिप्रोल 4 जी दवा 20–25 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से देर दोपहर के बाद. प्रयोग करें तथा भूरा माहू का प्रकोप अधिक होने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एस.सी. दवा 1.0 मिली प्रति 3 लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। देर से बोई गई धान की फसल में जिंक की कमी से होने वाले खैरा रोग की निगरानी करें और लक्षण दिखाई देने पर जिंक सल्फेट 5 किग्रा. चूना 2.5 किग्रा को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से पर्णीय छिड़काव करें। जल्दी बोई गई धान की फसल में दाना बनने/दूधिया अवस्था पर गंधी बग की निगरानी करें, जिसके प्रकोप से दाने सफेद एवं खोखले हो सकते हैं। प्रकोप पाए जाने पर फोलिडोल डस्ट 10–15 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से सुबह या देर शाम प्रयोग करें।
- शकरकंद: शरदकालीन शकरकंद की रोपाई की जा सकती है। अच्छी वृद्धि एवं उत्पादन के लिए उचित जल निकास वाली हल्की बलुई दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। पहली जुताई से पहले 100 क्विंटल अच्छी तरह सड़ी हुई कम्पोस्ट खाद प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें। अंतिम खेत तैयारी के समय 60 किग्रा नत्रजन, 40 किग्रा फास्फोरस एवं 60 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। उत्तर बिहार के लिए अनुशंसित किस्मों में *राजेंद्र शकरकंद*–5, *राजेंद्र शकरकंद*–35, *राजेंद्र शकरकंद*–47, *राजेंद्र शकरकंद*–43, *श्री भद्रा, कालमेघ* एवं *राजेंद्र शकरकंद*–92 शामिल हैं। अच्छी वृद्धि एवं उत्पादन के लिए 30×30 सेमी की दूरी पर रोपाई करें।
- मिश्रीकंद: ऊँचास जमीन में बुआई करने की सलाह दी जाती है। उत्तर बिहार के लिए *राजेंद्र मिश्रीकंद*–1 एवं *राजेंद्र मिश्रीकंद*–2 उपयुक्त किस्में हैं। सितंबर में बुआई के लिए 50–55 किग्रा बीज प्रति हेक्टेयर की दर से 15×15 सेमी की दूरी पर बुआई करें। फसल में पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए 200 क्विंटल अच्छी तरह सड़ी हुई कम्पोस्ट खाद के साथ 80 किग्रा नत्रजन, 60 किग्रा फास्फोरस एवं 80 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की अनुशंसित मात्रा दें। बुआई के समय नत्रजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा आधार खाद के रूप में दें। शेष आधी नत्रजन की मात्रा बुआई के 40–45 दिन बाद टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें, जिससे पौधों की अच्छी वृद्धि एवं कंद का बेहतर विकास हो सके।
- टमाटर: शरदकालीन टमाटर की बुआई करें। उत्तर बिहार के लिए उपयुक्त सामान्य किस्मों में *अर्का विकास, अर्का अभेद, अर्का आलोक, अर्का अभिजीत, अर्का सौरभ, अर्का मेघाली, पूसा उपहार, पूसा रूबी, काशी शरद* एवं *काशी अनुपम*–11 तथा संकर किस्मों में *अर्का सम्राट, अर्का अपेक्षा, अर्का विशेष, पूसा दिव्या, अर्का वरदान, अर्का रक्षक* एवं *अर्का अनन्या* शामिल हैं। सामान्य किस्मों के लिए 400–500 ग्राम तथा संकर किस्मों के लिए 150–200 ग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। सीमित बढ़वार वाली किस्मों में 60×45 सेमी, असीमित बढ़वार वाली किस्मों में 75×60–75 सेमी तथा संकर किस्मों में 90×60 सेमी की दूरी रखें। रोपाई से पहले 200–250 क्विंटल अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में मिलाएं। 120 किग्रा नत्रजन, 80 किग्रा फास्फोरस एवं 80 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर की अनुशंसित मात्रा दें। नत्रजन की पूरी मात्रा तीन बराबर भागों में; रोपाई के समय, रोपाई के 20–25 दिन बाद तथा 45–50 दिन बाद दे। पौध तैयार होने के लगभग 21–30 दिन बाद रोपाई करें।
- पशुपालन: पशुओं में थनैला (मास्टाइटिस) रोग की रोकथाम के लिए उनके पैरों को पोटैशियम परमैंगनेट के घोल से धोने की सलाह दी जाती है। दुहने के तुरंत बाद पशुओं को फर्श पर बैठने न दें तथा दुहने के बाद पशुओं के थनों को अच्छी तरह धोएं। लिटमस पेपर की सहायता से दूध का pH मान जांचकर उपनैदानिक थनैला रोग की स्थिति का पता लगाया जा सकता है। यदि दूध का pH 7.0 से अधिक हो, तो मैमीडियम, मैस्टिकिल या मैमीयूप जैसी दवाओं का प्रयोग करें तथा प्रति पशु प्रतिदिन 50 ग्राम खनिज मिश्रण खिलाएं। पशुशाला में उचित स्वच्छता एवं साफ–सफाई बनाए रखें।

आज का अधिकतम तापमानः 33.2 डिग्री सेल्सियस, जो सामान्य से 0.6 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 22.1 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 4.1 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी